بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

وَصَلَّى اللهُ عَلَيْكَ يَا وَلِيَّ الْعَصْرِ (عج) اَدْرِكْنَا وَلَا تُهْلِكْنَا

قَالَ اللهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى فِي كِتَابِهِ

وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعاً وَلَا تَفَرَّقُوْا

अल्लाह तबारक व तआला ने अपनी किताब में इरशाद फ़रमायाः

''और अल्लाह  की रस्सी को तुम सब मिल कर मज़बूती से थाम लो और तफ़रेक़ा न करो।''

क़ुर्आने मजीद, सूरए आले इमरान (३): आयत १०३

# क़ुर्आने करीम और अमीरुल मोमिनीन अलैहिस्सलाम

## फ़स्ले अव्वल

## मुक़द्दमा

अल्लाह के नाम से इब्तिदा करते हैं जो बड़ा मेहरबान और निहायत रहम करने वाला है और उसकी आख़री हुज्जत और हमारे ज़माने के इमाम हज़रत इमाम हुज्जत इब्निल हसन अल-अस्करी अलैहिमस्सलाम से फ़ैज़ व लुत्फ तलब करते हैं।

हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम अपनी मश्हूर और मारूफ़ हदीस जैसे हदीसे सक़लैन (दो गिराँ क़द्र चीज़ों वाली हदीस) में, जिसे तमाम मुसलमानों ने मुत्तफ़िक़ा तौर पर क़ुबूल किया है, ख़्वाह वह किसी भी फ़िर्क़े से ताल्लुक़ रखते हों, फ़रमाते हैः

اِنِّیۡ تَارِکٌ فِیۡکُمُ الثَّقَلَیۡنِ کِتَابَ اللّٰہِ وَعِتۡرَتِیۡ اَھۡلَ بَیۡتِیۡ مَا اِنۡ تَمَسَّکۡتُمۡ بِھِمَا لَنۡ تَضِلُّوۡا بَعۡدِیۡ اَبَدًا وَلَنۡ یَّفۡتَرِقَا حَتّٰی یَرِدَا عَلَیَّ الۡحَوۡضَ

**"मैं तुम्हारे दर्मियान दो गिराँ क़द्र चीज़ें छोड़े जा रहा हूँ, अल्लाह की किताब और मेरी इत्रत मेरे अहलेबैत अलैहिमुस्सलाम। अगर तुम इन दोनों से मुतमस्सिक रहोगे तो मेरे बाद कभी भी गुमराह नहीं होगे क्योंकि यह दोनों कभी भी एक दूसरे से जुदा नहीं होंगी यहाँ तक कि मेरे पास हौज़े (कौसर) पर वारिद होंगी।"**[1]

हमारी कोशिश और वाहिद मक़्सद यह है कि तालीमाते सक़लैन यानी क़ुर्आने मजीद और पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम और उन की पाक व पाकीज़ा आल अलैहिमुस्सलाम की रवायात से मुतमस्सिक रहना और उनकी तब्लीग़ करना ताकि उनकी सहीह तालीमात लोगों तक पहुँचे।

---

1 अल-मुर्तशिद फ़ी इमामते अली इब्ने अबी तालिब अलैहिमस्सलाम, मुहम्मद इब्ने जरीर तबरी, सफ़्हा ५५९, हदीस २३७

इस किताब के मक़ासिद हैं:

१. क़ुर्आने मजीद की उन आयतों को मुतआरिफ़ कराना जो अमीरुल मोमिनीन इमाम अली इब्ने अबी तालिब अलैहिमस्सलाम की शान में नाज़िल हुई हैं।

२. शीआ और अहले तसन्नुन मनाबेअ से मुख़्तसर तफ़्सीर के ज़रीए इन आयतों की ताईद करना।

३. इस हक़ीक़त को साबित करना कि अहलेबैत अलैहिमुस्सलाम की फ़ज़ीलत में, बिल-ख़ुसूस इमाम अली इब्ने अबी तालिब अलैहिमस्सलाम की शान में उन आयतों के नाज़िल होने के बारे में शीआ और अहले तसन्नुन दोनों अपने नुक़्ते नज़र में मुत्तफ़िक़ व मुत्तहिद हैं।

# पहली आयतः आयते तत्हीर

## आयत और तर्जुमा

اِنَّمَا يُرِيۡدُ اللّٰهُ لِيُذۡهِبَ عَنۡكُمُ الرِّجۡسَ اَهۡلَ الۡبَيۡتِ وَيُطَهِّرَكُمۡ تَطۡهِيۡرًا ﴿۳۳﴾

**बेशक अल्लाह का सिर्फ यही इरादा है कि आप से हर रिज्स को दूर रखे ऐ अहलेबैत अलैहिमुस्सलाम और आप को इस तरह पाक व पाकीज़ा रखे जो पाक व पाकीज़ा रखने का हक़ है।[1]**

## शीआ नज़रीया

- यह आयत हदीसे किसा के वाक़ए से मुतल्लिक़ है जब पाँच मुक़द्दस शख़्सियतें यानी रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम, अमीरुल मोमिनीन इमाम अली इब्ने अबी तालिब अलैहिमस्सलाम, हज़रत फ़ातिमा ज़हरा सलामुल्लाहि अलैहा, इमाम हसन अलैहिस्सलाम और इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम, हज़रत फ़ातिमा ज़हरा सलामुल्लाहि अलैहा की चादर के ज़ेरे साया जमा हुए थे।
- इस वाक़ए का अस्ल शीआ हवाला किताब अवालिमुल ऊलुम, जिल्द ११, सफ़्हा ९३० है जिस के मुअल्लिफ़ अब्दुल्लाह इब्ने नूरुल्लाह बहरानी हैं।
- जब अहले बैत अलैहिमुस्सलाम चादर के नीचे जमा हुए तो अल्लाह ताला ने फ़रिश्तों से फ़रमायाः ‘‘ऐ मेरे फ़रिश्तों और ऐ आस्मान में रहने वालों! मुझे मेरी इज़्ज़त व जलाल की क़सम! बेशक मैं ने यह बुलन्द आस्मान पैदा नहीं किया और न फ़ैली हुई ज़मीन, न चमक्ता हुआ चाँद, न रौशन सूरज, न गर्दिश करते हुए

---

[1] सूरए अहज़ाब (३३), आयत ३३

सय्यारे, न बेहता हुआ समुन्दर और न तैरती हुई कश्ती, मगर यह सब चीज़ें इन पाँच नुफ़ूस की मुहब्बत में पैदा की हैं जो इस चादर के नीचे जमा हैं।

- इस रिवायत में अहलेबैत अलैहिमुस्सलाम का तारूफ़ हज़रत फ़ातिमा ज़हरा सलामुल्लाहि अलैहा के ज़रीए किया गया है।
- हज़रत फ़ातिमा ज़हरा सलामुल्लाहि अलैहा की औलाद के लिए अरबी लफ़्ज़ 'बनू' इस्तेमाल हुआ है जो ३ या उस से ज़्यादा बच्चों के लिए इस्तेमाल होता है।
- इसका मत्लब यह है कि आयते तत्हीर के मुताबिक़ १२ इमाम अलैहिमुस्सलाम अहलेबैत में शामिल हैं।

## अहलेतसन्नुन नज़रिया

आएशा बिन्ते अबी बक्र ने बयान किया कि ''हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम एक सुब्ह स्याह ऊँट के बालों से बनी हुई चादर ओढ़े बाहर निकले कि वहाँ हसन इब्ने अली अलैहिमस्सलाम आए। आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम ने हसन अलैहिस्सलाम को चादर में ले लिया। फिर हुसैन अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए। आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम ने उन को भी उन के साथ चादर में ले लिया। फिर फ़ातिमा अलैहास्सलाम तशरीफ़ लाईं तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम ने उन को भी चादर में ले लिया। फिर अली अलैहिस्सलाम तशरीफ लाए। आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम ने उन को भी चादर में ले लिया। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम ने फ़रमायाः **बस अल्लाह का सिर्फ यही इरादा है कि आप से हर रिज्स को दूर रखे ऐ अहलेबैत अलैहिमुस्सलाम और आप को इस तरह पाक व पाकीज़ा रखे जो पाक व पाकीज़ा रखने का हक़ है।**''[1]

[1] सहीह मुस्लिम, किताब ४४, हदीस ९१ (शुमारा २४२४)

# दूसरी आयतः आयते मवद्दत

## आयत और तरजुमा

قُلۡ لَّاۤ اَسۡـَٔلُکُمۡ عَلَیۡہِ اَجۡرًا اِلَّا الۡمَوَدَّۃَ فِی الۡقُرۡبٰی

**''(ऐ पैग़म्बर) आप कह दीजिए कि मैं तुम से कोई अज्रे रिसालत नहीं चाहता मगर यह कि मेरे क़राबत्दारों से मुहब्बत करो।''[1]**

## शीआ नज़रिया

इब्ने अब्बास से रिवायत हैः

**जब यह आयत ''(ऐ पैग़म्बर) आप कह दीजिए कि मैं तुम से कोई अज्रे रिसालत नहीं चाहता मगर यह कि मेरे क़राबत्दारों से मुहब्बत करो।''** नाज़िल हुई तो लोगों ने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम ! आप के क़राबतदार कौन हैं जिन की मुहब्बत व मवद्दत अल्लाह ने हम पर वाजिब की हैं? आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम ने फ़रमायाः

''अली, फ़ातिमा और उन की औलाद अलैहिमुस्सलाम (और यह जुम्ला आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम ने तीन मर्तबा दोहराया)।''[2]

## अहले तसन्नुन नज़रिया

---

1 सूरए शूरा (४२), आयत २३

2 तफ़्सीरे फ़ुरात, फ़ुरात इब्ने इब्राहीम कूफ़ी, सफ़्हा ३९०, तफ़्सीरे बुरहान, सय्यद हाशिम बहरानी, जिल्द ४, सफ़्हा ८२२, हदीस ९५१२

इब्ने अब्बास से मन्क़ूल है कि जब मुझ से पूछा गया **''मगर यह कि मेरे क़राबतदारों से मुहब्बत करो''** तो सईद इब्ने जुबैर (जो वहाँ मौजूद थे) ने कहाः ''यहाँ इस से मुराद आले मुहम्मद अलैहिमुस्सलाम हैं।''[1]

[1] सहीह बुख़ारी, किताब ६५, हदीस ३४० (शुमारा ४८१८)

# तीसरी आयतः आयते मुबाहिला

## आयत और तरजुमा

فَمَنۡ حَآجَّکَ فِیۡہِ مِنۡۢ بَعۡدِ مَا جَآءَکَ مِنَ الۡعِلۡمِ فَقُلۡ تَعَالَوۡا نَدۡعُ اَبۡنَآءَنَا وَاَبۡنَآءَکُمۡ وَنِسَآءَنَا وَنِسَآءَکُمۡ وَاَنۡفُسَنَا وَاَنۡفُسَکُمۡ ۟ ثُمَّ نَبۡتَہِلۡ فَنَجۡعَلۡ لَّعۡنَتَ اللّٰہِ عَلَی الۡکٰذِبِیۡنَ ﴿۶۱﴾

**“पस जो भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम से कट हुज्जती करे बाद उसके कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम के पास इल्म आ चुका है तो उन से कह दीजिए कि आओ, हम अपने बेटों को बुलाएँ तुम अपने बेटों को बुलाओ, हम अपनी औरतों को बुलाएं तुम अपनी औरतों को बुलाओ और हम अपने नफ़्सों को बुलाएं तुम अपने नफ़्सों को बुलाओ और फिर हम मुबाहिला (ख़ुदा की बारगाह में बद दुआ) करें कि झूठों पर अल्लाह की लानत हो।”**[1]

## शीआ नज़रिया

हज़रत इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम अपने वालिद इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम से नक़्ल करते हैं, वह अपने वालिद इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से, वह अपने वालिद इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से, वह अपने वालिद इमाम अली इब्निल हुसैन अलैयहिमस्सलाम से, वह अपने वालिद इमाम हुसैन इब्ने अली अलैहिमस्सलाम से, वह अपने वालिद अली अमीरिल मुअमिनीन अलैहिस्सलाम से कि अमीरुल मोमिनीन

[1] सूरए आले इमरान (३), आयत ६१

अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम ने एक तूलानी ख़ुत्बे में इरशाद फ़रमायाः

''ऐ अली अलैहिस्सलाम ! जिस ने तुम्हें क़त्ल किया उस ने मुझे क़त्ल किया, जिस ने तुम से बुग्ज़ रखा उस ने यक़ीनन मुझ से बग्ज़ रखा और जिस ने तुम्हें सब व शतम किया (बुरा भला कहा) उस ने यक़ीनन मुझे सब व शतम किया है क्योंकि तुम मुझ से हो। तुम्हारा नफ़्स मेरे नफ़्स से है और तुम्हारी ख़िल्क़त मेरी ख़िल्क़त से है। यक़ीनन अल्लाह तबारक व तआला ने मुझे और तुम को ख़ल्क़ किया और मुझे नुबुव्वत के लिए मुन्तख़ब किया और तुम्हें इमामत के लिए। पस जिस ने तुम्हारी इमामत का इन्कार किया उस ने यक़ीनन मेरी नुबुव्वत का इन्कार किया।''[1]

## अहले तसन्नुन नज़रिया

आमिर इब्ने साद इब्ने अभी वक़्क़ास ने अपने वालिद से नक़्ल किया है कि मुआविया इब्ने अबी सुफ़्यान ने साद को गवरनर मुक़र्रर किया और कहाः

''कौन सी चीज़ तुझे रोकती है अली इब्ने अबी तालिब अलैहिमस्सलाम को सब व शतम करने से? तो उस ने जवाब में कहाः ''तीन चीज़ों की वजह से। मुझे याद है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम ने अली अलैहिस्सलाम के बारे में फ़रमाया था... (तीसरी चीज़ यह थी) जब यह आयत नाज़िल हुई थी कि ''**हम अपने बेटों को बुलाएँ तुम अपने बेटों को बुलाओ...**'' तो हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम ने अली, फ़ातिमा, हसन और हुसैन अलैहिमुस्सलाम को बुलाया और फ़रमायाः ''ऐ अल्लाह ! यह मेरे क़राबतदार हैं।''[2]

---

1 अमालीए शेख़े सदूक़, सफ़्हा ९५, हदीस ४, बिहारुल अन्वार, अल्लामा मजलिसी, जिल्द ४२, सफ़्हा १९०, हदीस २१

2 सहीह मुस्लिम, किताब ४४, हदीस ५० (शुमारा २४०४)

# चौथी आयतः हर क़ौम के लिए एक हादी है

## आयत और तरजुमा

اِنَّمَآ اَنْتَ مُنْذِرٌ وَّلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ۝۷

**"बेशक आप सिर्फ एक आगाह करने वाले हैं और हर क़ौम के लिए एक हादी है।"[1]**

## शीआ नज़रिया

अब्दुर रहीम अल-कसीर हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से नक़्ल करते हैं इस आयत के बारे में हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम ने फ़रमायाः

"आगह करने वाला मैं हूँ और अली अलैहिस्सलाम हादी हैं। ख़ुदा की क़सम! यह (आगाह करने वाला होना और हादी होना) हम से कभी दूर नहीं होगा और क़यामत तक हमेशा हमारे दरमियान रहेगा।"[2]

## अहले तसन्नुन नज़रिया

इब्ने नज्जार से मन्क़ूल है कि जब यह आयत नाज़िल हुई, रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम ने अपना दस्ते मुबारक अपने सीने अक़्दस पर रखा और फ़रमायाः

---

1 सूरए रअद (१३), आयत ७

2 अल-काफ़ी, शेख़ मुहम्मद इब्ने याक़ूब कुलैनी, जिल्द १, सफ़्हा १९२, हदीस ४, बिहारुल अन्वार, अल्लामा मजलिसी, जिल्द ३५, सफ़्हा ४०१, हदीस १४

''मैं आगाह करने वाला हूँ।'' और फिर अपना हाथ अली अलैहिस्सलाम के शाने की तरफ बढ़ाया और फ़रमायाः ''तुम हादी हो, ऐ अली! तुम्हारे ज़रीए मेरे बाद हिदायत तलब करने वालों को हिदायत नसीब होगी।''

इसी किताब की एक और रिवायत में अबी बर्ज़ख़ अस्लमी का बयान हैः मैं ने हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुनाः

''यक़ीनन मैं आगाह करने वाला हूँ।'' फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम ने अपना दस्ते मुबारक अपने सीनए अक़्दस पर रखा और फिर अली अलैहिस्सलाम के सीने अक़्दस पर रखा और फ़रमायाः ''हर क़ौम के लिए एक हादी है।''

इस रिवायत को उन्होंने अमीरुल मोमिनीन अली अलैहिस्सलाम से भी नक़्ल किया है कि वह हादी हैं।[1]

---

1 अद्दुर्रुल् मन्सूर फ़ी तफ़्सीरिल मासूर, जलालुद्दीन सुयूती, जिल्द ४, सफ़्हा ५०८, फ़त्हुल बारी फ़ी शर्हे सहीह अल-बुख़ारी, इब्ने हजरे अस्क़लानी, जिल्द ८, सफ़्हा २८४

# पाँचवी आयतः दावते ज़ूल अशीरा

## आयत और तरजुमा

وَاَنۡذِرۡ عَشِیۡرَتَکَ الۡاَقۡرَبِیۡنَ ﴿۲۱۴﴾

''और आप अपने क़रीबी रिश्तेदारों को आगाह कीजिए।''[1]

## शीआ नज़रिया

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमायाः

''जब यह आयत नाज़िल हुई हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम ने इमाम अली अलैहिस्सलाम को बुलाया और फ़रमाया, 'ऐ अली! हमारे लिए कुछ खाना तय्यार करो और एक मैमने की एक टांग और दूध का एक बरतन ले लो। फिर बनी हाशिम और बनी अब्दुल मुत्तलिब को जमा करो।' पस अमीरुल मोमिनीन अलैहिस्सलाम ने रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम के हुक्म के मुताबिक़ अमल किया और सब को दावत दी। उन में ऐसे भी थे जो यह सारा खाना अकेले खा सकते थे। फिर अली अलैहिस्सलाम ने उन के लिए दस्तरख्वान बिछा दिया और खाना रख दिया। फिर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम ने गोश्त खाना शुरू किया और उन लोगों को खाने की दावत देते हुए फ़रमाया कि 'आओ अल्लाह के नाम से खाओ।' उन्हों ने खाना शुरू किया यहाँ तक कि सब सैर हो गए और उन में से अकसर ने ज़्यादा खाया। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम ने गुफ्तुगू का आगाज़ किया और फ़रमायाः

''ऐ बनू अब्दिल मुत्तलिब, तुम में से कौन मेरे क़र्ज़ों को अदा करेगा, मेरे वादों को पूरा करेगा, मेरे बाद मेरा जानशीन और ख़लीफ़ा होगा ताकि मैं उस का भाई बनु और वह

---

[1] सूरए शोअरा (२६), आयत २१४

दुनिया और आखिरत में मेरा भाई हो? वह मेरा वसी, मेरा ख़लीफ़ा होगा, मेरा मुन्तख़ब शुदा, मेरा हम राज़ और मेरे मक़ाम व मन्ज़िलत में मेरे साथ होगा।''

इमाम अली अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि तमाम मजमा ख़ामोश रहा जब कि मैं ख़ड़ा हुआ और मैं ने कहा, ''मैं करूँगा ऐ अल्लाह के रसूल! मैं आप के कर्ज़ को अदा करूँगा, आप के वादों को पूरा करूँगा और आप की उम्मत और अहलेबैत में आप का ख़लीफ़ा बनूंगा। मैं आप का भाई रहुँगा और आप मेरे भाई रहेंगे और दुनिया व आख़िरत में आप के साथ आप के मक़ाम पर रहूँगा।''

हालाँकि इमाम अली अलैहिस्सलाम उन सब में सब से छोटे थे लेकिन उन में सब से ज़्यादा मुस्तहकम थे। हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम ने फ़रमायाः ''यक़ीनन मैं ने उसे क़ाएम किया ऐ अली!'' इसी लिए उख़ुव्वत और ज़ियारत उन के लिए फ़र्ज़ हो गई।[1]

## अहले तसन्नुन नज़रिया

अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास ने अली इब्ने अबी तालिब अलैहिमस्सलाम से रिवायत नक़्ल की है:

'जब यह आयत हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम पर नाज़िल हुई कि ''**और आप अपने क़रीबी रिश्तेदारों को आगाह कीजिए।**'' तो रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम ने मुझे बुलाया और फ़रमायाः ''ऐ अली! अल्लाह तबारक व तआला ने मुझे हुक्म दिया है कि अपने क़रीबी रिश्तेदारों को आगाह करूँ... ऐक ख़ास मिक़्दार के खाने का इन्तेज़ाम करूँ, उस में मैमने की एक टाँग रखना और हमारे लिए दूध का एक बड़ा प्याला भर देना। बनू अब्दिल मुत्तलिब को जमा करू ताकि मैं उन से ख़िताब करूँ और मुझे जो हुक्म दिया गया है वह पहुँचा दूँ। मैं ने

[1] अल-हिदायतुल कुबरा, हुसैन इब्ने हमदान ख़सीबी, सफ़्हा ४७, हदीस ५

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम के हुक्म के मुताबिक़ अमल किया और उन सब को बुलाया और उस दिन तक़रीबन ४० अफ़राद मौजूद थे।'

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम ने फ़रमायाः ''ऐ बनू अब्दे मुत्तलिब, बख़ुदा! मैं अरबों में से किसी ऐसे नौजवान को नहीं जानता जो इस से बड़ी चीज़ ले कर आया हो जो मैं आप सब के लिए लाया हूँ। बेशक मैं आप के लिए दुनिया और आख़िरत की बेहतरीन चीज़ें ले कर आया हूँ। अल्लाह तबारक व तआला ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं आप सब को उस की तरफ दावत दूँ। पस आप में से जो कोई इस अम्र में (कारे रिसालत) में मेरी मदद करेगा वह आप के दर्मियान मेरा भाई, मेरा वसी और ख़लीफ़ा होगा।''

अली अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि फिर सब को रोक लिया गया और मैं ने अर्ज़ कियाः ''यक़ीनन ऐ अल्लाह के नबी मैं उस में आप का हामी रहूँगा।'' जब्कि मैं उन में उम्र में सब से छोटा था... फिर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम ने मेरा शाना थाम कर फ़रमायाः ''यक़ीनन यह (अली) मेरा भाई, वसी और ख़लीफ़ा है आप सब के दर्मियान। (क़ुरैश का) गिरोह हंसने लगा और अबू तालिब अलैहिस्सलाम से कहने लगे। बेशक आप को हुक्म दिया गया है कि आप अपने बेटे की बात सुनें और उस की इताअत करें।''[1]

[1] तारीख़े तबरी, जिल्द २, सफ़्हा ३६१, बाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम की नुबुव्वत का आगाज़ जब अल्लाह तआला ने जिब्रईल अलैहिस्सलाम को अपने पैग़ाम के साथ आप के पास भेजा और हिजरते मक्का के वाक़िआत तक किया हुआ